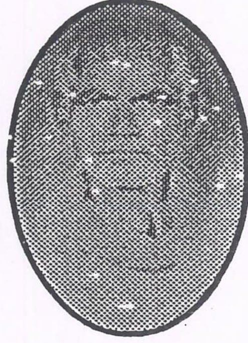
# समर्पण



**स्व० बुच्चन भगत**
**(1928–1991)**

बहादुरपुर, लहेरियासराय, दरभंगा निवासी स्व० बुच्चन भगत मिथिलाक सन्त-परम्पराक एक गोट निष्काम भक्त ओ सेवैत छलाह। हिनक इष्ट छलथिन विषहरि जनिक गहबर ई लहेरियासराय स्टेशनक निकास द्वारक वाम भागमे स्थापित कयने छलाह आ सम्प्रति एहि स्थल पर श्रीशनिदेवक भव्य मूर्त्ति सेहो स्थापित भेल अछि।

स्व० श्रवण रजकक आत्मज स्व० भगतक सन्तति-परम्परा एखनहुँ वर्तमान अछि आ श्री परशुराम रजक तथा श्री लालबाबू रजक, हुनक पुत्रद्वयमे द्वितीय हुनक परम्पराक सुरक्षामे लागल देखि पड़ैत छथि।

भाओ-भगैतमे निष्णात स्व० भगत सर्पदंशसँ पीड़ित व्यक्तिक निरपेक्ष भावें झाड़-फूक द्वारा उपचार करबाक हेतु प्रख्यात छलाह। संगहि हिनका कोखिया गोहारि, तिरिया गोहारि आदिक हेतु इलाका भरिसँ आमंत्रण भेटैत रहैत छलनि जतऽ ई अपन कलाक प्रदर्शन द्वारा लोकरंजन ओ लोकमंगलक साधन करैत रहैत छलाह।

मिथिलाक अशिक्षित-अर्द्धशिक्षित समाजमे प्रचलित परम्परा ओ संस्कृतिसँ सम्बद्ध लोकगीत-गाथागीत आदिक प्रति अनन्य निष्ठा रखनिहार एहि सेवैतक कण्ठमे बहुसंख्यक गहबर-गीत सभ सुरक्षित छल। अपन पी-एच.डी. शोधप्रबन्धक हेतु शब्द-संकलनक क्रममे संकलनकर्त्ता स्व० भगतक संग विभिन्न स्थानक परम्परामूलक जातीय व्यवसायीलोकनिक संग अन्तरंग-वार्त्ताक संगहि हुनकालोकनिक जातीय जीवनक सांस्कृतिक ओ व्यवहारपरक गीतसँ सेहो अवगत भेलाह आ कतोक गीतकेँ लिपिबद्ध सेहो करैत गेलाह, जकर विवेचन-विश्लेषण ओ बानगीक सकलन एहि निबन्ध ग्रन्थक कारण कहल जा सकैछ। आप्त भावक संग ई ग्रन्थ स्व० भगतजीक स्मरणकेँ श्रद्धापूर्वक समर्पित छनि।

स्वतंत्रता दिवस
15.08.07

योगानन्दझा
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा- 846001

# गहबर गीत

सकलन-सम्पादन

**डा. योगानन्द झा**




**मिथिला रिसर्च सोसाइटी**
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा – 846 001

GAHBAR-GEET : A critical approach & collection of Maithili folk songs scattered in the throats of downtrodden classes of Mithila
by Dr. Yoganand Jha, 2007, Rs. 15.00



● प्रकाशक : मिथिला रिसर्च सोसाइटी
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा – 846001

● सौजन्य : श्रीमती संयोगिता (सोनल)

● प्रथम संस्करण : 2007

● मूल्य : Rs. 15.00 (पन्द्रह टाका) मात्र

● प्राप्ति स्थान : श्री लाल बाबू रजक
विषहरि गहबर
निकास द्वारसँ दक्षिण
लहेरियासराय स्टेशन
दरभंगा – 846001

● प्रमुख वितरक : साहित्य निकेतन, न्यू मार्केट
लहेरियासराय, दरभंगा–846001

● कम्प्यूटर संयोजन : अभय कुमार झा

● मुद्रक : कुशल कम्प्यूटर एण्ड प्रिंटिंग
जगत नारायण रोड, कदमकुआं
पटना – 3, ✆ : 9304429215

# गहबर गीत

मैथिली लोकवृत्तक सर्वाधिक प्रशस्त ओ समृद्ध विधा थिक लोकगीत। एहि विधामे मिथिलाक सांस्कृतिक चेतनाक सुस्पष्ट ओ सजीव चित्रांकन देखि पड़ैत अछि। संगहि ई सभ मिथिलाक सामाजिक ओ सांस्कृतिक जीवनक अभिन्न अंग बनल एकर लोकसंस्कृतिक संचालनमे प्रमुख भूमिकाक निर्वाह करैत रहल अछि। चौमासा, छमासा, बारहमासा, वसन्त, फागु, चैतावर, जोगीड़ा, कजरी, मलार, रास, ग्वालरी, विरहा, पराती, साँझ, झुम्मरि आदि सामयिक लोकगीत; कमरथुआ ओ जगरनथियाक यात्रागीत; विविध प्रकारक शिशु गीत, लोकक्रीड़ा गीत, श्रमापनोदनसँ सम्बद्ध रोपनी आ लगनीक गीत; नदीमातृक मिथिलाक कोशी, कमला, जीवछ, गंगासँ सम्बद्ध नदी गीत; गोसाउनि, गौरी, ज्वालामुखी, शीतला, धर्मराज, हनुमान, ब्राह्मण, भैरव आदिसँ सम्बद्ध भक्तिपरक गीत तथा नचारी–महेशवाणी आदि गीत मिथिलाक लोकरंजन करैत आयल अछि। अदौसँ नारीकंठ जाहि गीत सभकेँ संजोगने आबि रहल अछि से थिक संस्कारपरक गीत जाहिमे सोहर–खेलौना जन्मोत्सवक गीत प्रकार सभ थिक। एहिना मूड़न, उपनयन ओ विआहक अवसर पर सेहो गीत सभ गाओल जाइत अछि जाहिमे वैवाहिक गीतकेँ भास ओ विषयक आधार पर विभिन्न उपवर्ग यथा पसाहनि, नहछू, परिछन, सिनुरदान, कोबर, महुअक, डहकन, उदासी, समदाओन आदिमे विभाजित कएल गेल अछि। कतोक सम्प्रदायमे मृत्यूपरान्त मरौटी किंवा निर्गुण गीत गयबाक परम्परा सेहो देखि पड़ैत अछि। एतावता मैथिली लोकवृत्तक ई विधा बहुआयामी रहल अछि।

लोकवृत्तक एहि विधाकेँ छिजबा ओ नष्ट होयबासँ बचयबाक उद्देश्यें किंवा संरक्षित कऽ लेबाक उद्देश्यें बहुतोक विद्वानलोकनि मैथिली लोकगीतक संकलन सभ प्रकाशित करबैत रहलाह अछि जकरा अपन निधिक प्रति चैतन्य संपुटित भावविन्यास कहल जा सकैछ। एहि क्रममे राम इकबाल सिंह 'राकेश', प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन', बालगोविन्दझा 'व्यथित', विभूति/ज्योत्स्ना 'आनन्द', कामेश्वरी देवी, इन्द्रकान्तझा, पूर्णिमा देवी आदिक नाम लेल जा सकैछ। मुदा एकर सर्वाधिक व्यवस्थित अनुसन्धान–अनुशीलन ओ संकलनक श्रेय डा० अणिमा सिंहकेँ रहलनि जे लोकमंत्रादिकेँ सेहो अपन संकलनमे समाहित कयने छथि। तथापि अद्यावधि यावन्तो संकलन

प्रकाशमे आबि सकल अछि ताहिसँ आभिजात्य संस्कारक गंध अबैत बूझि पड़ैत अछि आ लोकसंस्कार बहुधा ओहि स्तर धरि अवडेरले राखल गेल अछि जे आभिजात्य वर्गके स्वीकार्य नहि भेल करैछ। हमर संकेत एहि संकलन सभमे अनवस्थित गहबर गीतसँ अछि।

गहबर गीत मैथिली लोकगीतक ओ प्रकार भेद थिक जकर गायन लोकपरम्पराक गोहारि, भगतइ आदिक क्रममे कयल जाइत अछि। गोहारि- भगतइ आदिमे लोकमान्यताप्राप्त छप्पन कोटि देवतामेसँ किनको अथवा मृत पूर्वजक आवाहन कयल जाइत छनि। ई आवाहन मन्त्रद्रष्टा भगत किंवा ओकर शिष्य परम्पराक सवैत पर होइत छैक जकरा देवता/प्रेत विशेषक घोड़ा कहल जाइत छैक। आवाहन भेला पर घोड़ा थरथर काँपऽ लगैत अछि; हाथ, पैर जाँघ पर चाटी मारऽ लगैत अछि, मुँहसँ फुफकारी वा अन्य शब्द करऽ लगैत अछि, कूदफान करैत नाचऽ लगैत अछि आ एहिना आन प्रकारक क्रिया करऽ लगैत अछि जकरा सम्बन्धमे कहल जाइत छैक जे ओ घोड़ा पूर्व स्थितिमे अयबासँ पूर्व धरि नहि बूझैत रहैत छैक जे ओ की सभ क्रिया कयलक अछि। आवाहनक हेतु लोकजगतमे **'भाओ'** शब्दक प्रयोग होइत छैक आ ई बहुधा निसबद रातिमे कयल जाइत छैक। जाहि देवता वा पितरक आवाहन होइत छनि, तनिकासँ सम्बन्धित गीतक गायनक हेतु मृदंग किंवा ढोल ओ झालि वाद्यक संग किछु गोटे रहैत छथि। ओ सभ जाहि प्रकार भेदक गीत गबैत छथि सैह गहबर गीत मध्य परिगणित कयल जा सकैत अछि, जकर संकलन-सम्पादन-समीक्षा दिस अनुसंधित्सुलोकनि उपेक्षे भाव रखलनि अछि। प्रकाशित लोकगीतक सामग्रीके देखला उत्तर ई तथ्य स्पष्ट बुझना जाइत अछि।

जखन कोनो व्यक्ति वा परिवारविशेषमे निरन्तर अभावग्रस्तता रहैत छैक आ कतबो कठिन परिश्रम कयनहुँ पूरी नहि पड़ैत छैक, वैवाहिक जीवनक पैघ अवधि भेलो उत्तर सन्ततिक अवतरणक कोनो सूरसार नहि देखि पड़ैत छैक, सम्पत्तिक छिजाओ होमऽ लगैत छैक, परिवारमे निरन्तर कोनो ने कोनो दुर्घटना घटऽ लगैत छैक, नजरि-गुजरिसँ ग्रस्त नेना तबाह रहऽ लगैत छैक, पोसुआ गाय-महींस प्रदूषित आ कम दूध देबऽ लगैत छैक किंवा एहने घटना सभ होइत छैक, तँ ओहि परिवारक लोक कारण आ निदान दुनू जनबाक हेतु भगत आ घोड़ाके भाओक हेतु आमंत्रित करैत अछि। भगतक अनुसार धूप, गुग्गुल, पड़वा, दारू, सिरनी, कपड़ा आदि विविध पूजन सामग्री एकत्र कयल जाइत छैक आ आयोजन होइत छैक। भाओ भेला उत्तर घोड़ा पर क्रमशः विभिन्न देवता ओ मनुषदेवाके उतारल जाइत छैक जे पुछला पर विपत्तिक कारण आ निदान दुनू जनबैत छैक। लोकमान्यता छैक जे तदनुरूप कयने स्थितिमे सुधार होइतहिँ छैक।



एहि लोकमान्यताक परिपूर्त्यर्थ आवाहनक हेतु जे गीत सभ गाओल जाइत अछि तकरा गहबर गीतक अभिधान देल जयबाक चाही, कारण एहन गीत सभ बहुधा जातीय गहबरक कुलदेवता, जाति-देवता वा पितरदेवतासँ सम्बद्ध रहैत अछि। एहि प्रकारक देवीदेवताक किछु नामावली एतऽ उद्धृत कयल जाइछ यथा – काली, बन्दी, गोरैया, गहिल, गाङ्गो, दीना-भद्री, कारिख, शीतला, गरीब भुइञा, बामति, अघोरी, फुलमति, लुकेशरि, महिषासुर, जगदम्बा, दुर्गा, राहु, मनुषदेवा आदि।

एहि प्रकारक गीत सभक अध्ययन अत्यन्त रोचक उपसंहति प्रदान करयवला अछि, जेना – (क) एहि प्रकारक गीतक सुर ओ ताल मृदंगिया आ झलैताक उत्साहक अनुसरण करैत अछि। (ख) एकर भाषा ओ शब्द लोकजीवनक अत्यन्त निकट देखि पड़ैत अछि आ शास्त्रीयताके अवडेरने रहैत अछि। (ग) लोकजीवनक हास-विलास ओ उल्लास एहि प्रकारक गीतमे सहजहि उपलब्ध अछि। (घ) गीत सभक स्वरूप मुक्तक आ कथा-काव्यपरक दुनू प्रकारक अछि, आदि।

उदाहरणक हेतु गहबर गीत मध्य परिगणनीय किछु कालीक झूमरि पर विचार कयल जा सकैछ। वस्तुतः भारतीय शास्त्रीय दर्शनमे काली मार्कण्डेय पुराणक देवी माहात्म्य ओ अन्यान्य पुराणक अवधारणा थिकीह। दुर्गासप्तशतीक पञ्चम अध्याय श्लोक ८७-८८ मे कहल गेल अछि जे –

**शरीर कोशाद्यत्तस्याः पार्वत्या निःसृताम्बिका।**
**कौशिकीति समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते॥**
**तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाभूत्सापि पार्वती।**
**कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृताश्रया॥**

एहि तरहेँ शास्त्रीय काली शिवक अर्द्धांगिनी पार्वतीक एकगोट परिवर्तित स्वरूपटा थिकीह जनिक ध्यान ओ स्तवनसँ सम्बद्ध भक्ति गीतक परम्परा मैथिलीओमे विद्यापतियेक कालसँ भेटैत अछि। शाक्त भक्ति प्रवाह ओ तद्जन्य मैथिली पदावलीक रचना मिथिलामे अनवच्छिन्न रूपेँ होइत रहल अछि। मुदा गहबर गीतक काली मिथिलाक सामान्य बेटी छथि जे तन्त्रसाधना सिखबाक हेतु उताहुल छथि। एहि शिक्षाक हेतु अनिवार्य प्रतिदान किंवा दक्षिणाक रूपमे ओ जे किछु देबऽ चाहैत छथिन से विभिन्न कारणसँ स्वीकार्य नहि मानल जाइत छैक, कारण प्रशिक्षिकाक ध्यान हुनक भाय गोरिल पर छनि। मुदा गोरिलके प्रदान कऽ देबामे भ्रातृवत्सला काली अपन असमर्थता देखा लोकजीवनक भ्रातृभावके उत्कृष्ट स्तर प्रदान करैत छथि आ श्रोता वा पाठकके एकटा सहज भावलोक धरि पहुँचा दैत छथि। गीत एहि प्रकारेँ अछि–

कहाँ गेलऽ किए भेलऽ कैथिन के बेटिया हे
तनी गुनमा हमरो दिअउ सिखाय।।
जब तोरा आहे काली गुनमा सिखयबउ
हमरो के किए देबऽ दान।।
जब तोहें आगे कैथिन गुनमा सिखयबें
गल्ला गिरमल देबौ तोरा दान।।
हम नहि लेबौ काली गल्ला गिरमलहरबा
ओहो तँ देखत माय-बाप।।
जब तोहें आगे कैथिन गुनमा सिखयबें
छोटकी ननदिया देबौ दान।।
हम नहि लेबौ काली छोटकी ननदिया
ओहो छौकऽ पर के तिरिया।।
जब तोरा आगे काली गुनमा सिखेबउ
छोटे भैय्या गोरिल लेबौ दान।।
अगिया लगेबौ कैथिन तोहरो जे गुनमा
बजर खसेबौ तोहरो माथ।।
हम नहि देबौ गे कैथिन भइया दुलरुआ
सहोदर देल नहि जाय।
एक बेर बोलू हो पञ्चन सिरी भगवान हो
दोसर बेर बाबा वैद्यनाथ हो।।
तेसरे बेर बोलू हो पञ्चन इन्दर कविलास हो
चारिम बेर श्रीसीताराम हो।।

एहिना एकटा गहबर गीतमे सलहेसक बालस्वरूपक सहज ओ मनोहर झाँकी प्रस्तुत करैत भक्त लोकगीतकार कहने छथि–

मैया के गोद से उतरल राजा सलहेस
बाबा के ठेहुनमा धेने ठाढ़।
छओही महिनमा के जनमल राजा सलहेस
सेहो माङय चरण घुघुरा।।



घुघुरू-घुघुरू मत करियौ राजा सलहेस
इहो हेतऽ जीव के जंजाल।
पटना शहर के होरिल दरजिया
सिविहह नामे नामे बाँहि।।
सेहो कुरता जब पहिरत सलहेस
छमकैते जयतै ससुरारि।
मगह मुंगेर के चतुर सोनरबा
गढ़ि देल घुघुरू अनूप।।
सेहो घुघुरू जब पहिरत राजा सलहेस
रुनुझुनु-उठतै अनघोल।।

एही तरहें अन्यान्यो लोकदेवता सभसँ सम्बद्ध लोकगाथेतर मुक्तक गीत सभ मिथिलाक लोकजगतमे पुष्कल परिमाणमे लोककंठमे वर्त्तमान अछि आ आधुनिक टी.व्ही., कम्प्यूटर युग सुरसा जकाँ मुँह बओने ओकरा सभकें गीड़ि-जयबाक हेतु तत्पर अछि। तें समय अछैत एकरा सभक संकलन मैथिली लोकसाहित्यक एक गोट विशिष्ट ओ उत्कृष्ट विधाक प्रति न्याय होयत। लोकजगतसँ प्राप्त किछु एहन गीत सभ एतऽ संकलित कऽ उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत कयल जाइत अछि।

## देवोक सुमिरन

काँचहि-बाँस के डलबा रे डलबा सूत कमल केर फूल हे।
ओही फूल पुजबै काली हम्मर देवता काली हमर होइयै समतूल हे।।
ओही फूल पुजबै बन्दी हम्मर देवता बन्दी हमर होइयै समतूल हे।।
ओही फूल पुजबै सत्ती हम्मर देवता सत्ती हमर होइयै समतूल हे।
ओही फूल पुजबै महामाया हम्मर देवता महामाया मैया होइयै समतूल हे।।

## कालीक झूमरि

कओने राज उपजल झउरा हे गहुमबा हे लहुलाखन देवी,
देवी हे, कओने राज जँतबा हय बहुत हे लहुलाखन देवी।
पुरबे राज उपजल झउसा हे गहुमबा हे लहुलाखन देवी,
देवी हे, पछिमे राज जँतबा हय बहूत हे लहुलाखन देवी।।

कओने बहिनो पीसै छथिन झउसा हे गहुमबा हे लहुलाखन देवी,
देवी हे, कओने बहिनो मारै झिकबा झोर हे लहुलाखन देवी।
काली बहिनो पीसै छथिन झउसा हे गहुमबा हे लहुलाखन देवी,
देवी हे, बन्दी बहिनो मारै झिकबा झोर हे लहुलाखन देवी।।

•

तिसिया खेतमे तिसिया मसुरिया खेतमे राइ
हे काली ताही खेतमे ना
काली दाइ झुमरि खेलाइयै
हे काली ताहो खेतमे ना
झुमरि खेलाइते काली गोर बिछिया गेलै हेराय
हे काली ताही करणमा ना
काली दाइ रोदना पसारथिन
हे कालो ताही करणमा ना
एतना वचनिआ सुनलनि भैया बरइता हे
भैया खोजि हे दिअउ ना
काली गोर बिछिया गेलै हेराय हे
भैया खोजि हे दिअउ ना
एतना शहरबा के साँकर मोर गलिआ
हे काली गलिये-गलिये ना
काली दाइ बसै छै सोनरबा हे भैया
गलिये-गलिये ना
कहाँ गेलऽ किए भेल भैया सोनरबा हितबा
गढ़िये दिऔ ना
काली गोर बिछिया गेलै हेराय हे सोनरा
गढ़िये दिऔ ना
गढ़िए गुढ़िए सोनरा केलकै समतूलबा
हे काली लैए लिअउ ना



काली दाइ, गोर के गोर बिछिया
हे काली लैए लिअउ ना
पहिरि-ओढ़िए हे काली भेलै समतुलबा
हे काली चलिए देलकै ना
काली दाइ हलसैत-फुलसैत गेली ससुरारि
हे काली चलिए देलकै ना

•

कइसन देखै छी घन बँसबरिया कइसन बहे नदी जमुना।
हरियर देखै छी घन बँसबरिया शीतल बहे नदी जमुना।।
ढुनमुन ढुनमुन काली हमर खेलए गौआ जब बथनमा।
कओने जोगिनिआ नजरि लगेलकै काली हमर हरि लेलकै।।
सउँसे डइनी ननद हए जोगिनिआ ओहे काली हरि लेलकै।।
कटबै मे चानन के गछिया निपबै मे अङ्गनमा।
तऽबे मोरा घुरतै काली सत्ती निरमोहिया।
सबके नऽ दैछऽ काली अन धन सोनमा।
सेवक खातिर दिअउ हे काली यश के मोटरिया।।

•

कओने महीनमा देवी तू सुतलऽ अङ्गनमा काली तू सुतलऽ अङ्गनमा हे।
देवी हे कहमा भिजौलऽ नामी केस देवघरबा देवी हमर रूसल जाइयै हे।।
आसिन महीनमा सेवक हम सुतलहुँ अङ्गनमा सेवक सुतलहुँ अङ्गनमा हो।
सेवक हो ओसबे भिजेलहुँ नामी केस, देवघरवा देवी हमर रूसल जाइयै हे।।
किनका पोखारिया देवी तू माथा मले गेलऽ काली तू माथा मले गेलऽ हे।
देवी हे कहमा हेरौलऽ टिकुली लिलाट, देवघरबा देवी हमर रूसल जाइयै हे।।
बाबा के पोखरिया सेवक हम माथा मले गेली हो, सेवक माथा मले गेली हो।
सेवक हो ओतही हेरौली टिकुली लिलाट, देवघरबा देवी हमर रूसल जाइयै हे।।

कहाँ गेलए कीए भेलए झिनमा मलहबारे, झिनमा मलहबा रे।
झिनमा खोजि दिअऽ टिकुली लिलाट, देवघरवा देवी हमर रूसल जाइयै हे।।
एक जल फेकलक झिनमा दोसर जाल फेकलक हे।
झिनमा रे पड़ि गेलौ घोंघरी सेमार देवघरवा देवी हमर रूसल जाइयै हे।।
तेसर जाल फेकलक जब झिनमा महलबा रे, झिनमा मलहबा रे।
झिनमा रे भेटि गेलौ टिकुली लिलाट, देवी काली हम्मार मानि गेलखिन हे।।

●

कओने बहिनो तुलसी रोपैये, के दैये धुपदान गे।
कओने बहिनो आढ़त दैये, जरैये पलहास गे।।
काली बहिनो तुलसी दैये, जगदम्मा दैये धुपदान गे।
भागवत बहिनो आढ़त दैये, जरैये पलहास गे।।

●

कओने दिन आहे काली तोहरो जनम भेल
कओने दिन भेल छठिहार हे।
शनि दिन आहे सेवक हमरो जनम भेल
शनि छवे भेल छठिहार हे।।
कओने घर अहि काली तोहरो जनम भेल
कओने घर भेल छठिहार हे।
टुटले मड़ैया हे सेवक हमरो जनम भेल
मुनहर घर भेल छठिहार हे।।
कथिये पहिरि हे काली तोहरो जनम भेल
कथिये पहिरि छठिहार हे।
फाटले पुरान पहिरि हमरो जनम भेल
पटम्मर पहिरि छठिहार हे।।
कओने फूल ओढ़न हे काली कओने फूल पहिरन हे
कओने फूल तोहरो सिंगार हे।
एली फूल ओढ़न हे सेवक बेली फूल पहिरन हे
अड़हुल फूल हमरो सिंगार हे।।

●



छोटी रे अँगनमा काली माइ बहुते पसार।
झुमरी खेलाइते हे काली टुटलौ गिरमलहार।।
कौआ लऽ गेल मुनरी गोरैया गिरमलहार।
ताही रे कारणमा कालीदाइ रोदना पसार।।
होयतै परतिया काली हे लगतै बजार।
कीनि देबौ मुनरी बेसाहब गिरमलहार।।

## महामायाक गीत

उत्तर दिसासँ अयली महामाया मैया ठाढ़ि भेली जमुना किनार।
नैया लाबू नैया लाबू झिनमा मलहबा हम पंथ उतरब पार।।
टूटल पंथ हे मैया टूटल करुआरिया कोन विधि उतरब पार।
अरही काठ के नैया निरमाओल चन्दन लिअऽ करुआरि।।
खने नैया खेबय खने भसिआबय खने पुछए जतिया विचार।
जओ तोहें आ रे केवटा बहिना पकड़बें नावे पर दऽ देबौ शाप।।
हम छिकौं जातिक ब्राह्मणी रे केवटा माय बाप रखलक काली नाम।
हाथ बाट धरबे कोढ़ी कुष्ट फुटतौ पापक नैया डुबतौ बुड़िआइ।।

## फुलमतिक गीत

बेतिया से अयलै फुलमति झुमरिया खेलैत हे अयलै
टूटि हो गेलै गल्ला गिरमलहार।
जनु कानू जनु खीजू फुलमति बहिनिआ हे
आनि देब गल्ला गिरमलहार।।
सोनपुर शहरिया से सोनरा बजायब
गढ़ि देतै गल्ला गिरमलहार।।
पटना से पटबा मँगायब हे बहिनिआ
गाँथि देतै गल्ला गिरमलहार।।

## लुकेशरिक गीत

पछिमहि राज से बहार भेलै गे लुखा देवी
नेपुर उठैयै अनघोल।
पैर के नेपुलवा लुखो खोइँछा भरि लेलकै
चलि भेलै काशीराम पार।।
किए तोरा घटलौ लुखो अन-धन सोनमा
किए घटलौ पाकल बीड़ा पान।
नहि हमरा घटलै बाबा अन-धन सोनमा
नहि घटलै पाकल बीड़ा पान।।
बारह बरिस बाबा तोरे नग्र बसलौं
कहियो ने गेलौं गंगा असलान।
अँगना मे कुँअबा खुनाय देब लुकेशरि
बाँटि देब रेशम सुत डोरि।।
कुँअबा के पानी बाबा सड़ल गेन्हाइ छै
सैला मे बहय निर्मल पानि।
सैला, सैला मत भूकू देवि लुकेशरि
सैला बहय चौरबा के पार।।
लिखल जे हेतै बाबा चौरबा के पारबा
लिखल मेटल नहि जाय।।

## बामतिक गीत

बामति सुरति देखि भुललै बरहामन छौड़ा
लए रे गेलइ डिंगरा वन के ओर।
एक वन गेलऽ बरहामन दुइ वन गेलऽ
तेसर वन अँचरा देलऽ बिलमाय।।
छोड़ू छोड़ू आहो बरहामन हमरो अँचरबा
रोवत हेतै गोदी के बलकबा।
घरहीमे छौक गे बामति सासु तोर ननदिया
खेलबैत हेतौ गोदी के बलकबा।।



सासु मोर अन्हरी ननदि बसै ससुररिया
रोवैत हेतै गोदी के बलकबा।
बड़ आशा धेलियौ बामति तोहरो अँचरबा
हमरो आशा करै छें निराश।।

## गाङ्गोक गीत

पर्वत मोहार पर चनसुर हे बुनलौं
सेहो रे चनसुर मिरिगबा चरि गेल।
बरजू बरजू राजाजी अपनो मिरिगबा
सब रे चनसुर मिरिगबा चरि गेल।।
मिरगा के मारि हो राजाजी खलरी घिचेबै
गाङ्गो छौड़ी के चोलिया देबै सिलाय।
चोलिया पहिरि गाङ्गो भेलि समतुलबा
चलि भेलै लवी ससुरारि।।
एक कोस गेलै गांगो पहर पयरा हे बितलै
जुमि गेलै लवी ससुरारि।।

## कमलाक गीत

कहमही उपजल हे कमला जल हे गुआ पान हे।
मैया हे, कहमही उपजल धान, अगमपन्थ कमला दया करु हे।।
किए सुत कतरब हे कमला जल हे गुआ पान हे।
मैया हे, किए सुत काटब पन्थ, अगम पन्थ कमला दया करु हे।।
सोने सुत कतरब हे कमला जल हे गुआ पान हे।
मैया हे, दये सुत काटब पन्थ, अगम पन्थ कमला दया करु हे।।

•

रूनझुनु बाजै छै बजनिआ, आबै छथिन कमला मैया के रन्थ।
कहमा बैसेबै छप्पन कोटि देवता, कहमा बैसेबै कमला मैया के रन्थ।
चारु दिस बैसेबै छप्पन कोटि देवता, बीचेमे बैसेबै कमला मैया के रन्थ।।
कथी लय बोधबै छप्पन कोटि देवता, कथी लय बोधबै कमला मैया के रन्थ।
फूले-पाने बोधबै छप्पन कोटि देवता, परबा लय बोधबै कमला मैया के रन्थ।।

## अघोरीक गीत

कथी बिनु आहो नाताजी मुहमा मलिन भेल
कथी बिनु घुरमै शरीर।
पान बिनु आहो नाताजी मुहमा मलिन भेल
गाँजा बेगर घुरमै शरीर ।।
पनमा जे खेलऽ नाताजी पिकिया नेरौलऽ
ओही पिकिया जनमल अढ़ुलबा फुल के गाछ।
गजबा जे पीलऽ हो नाताजी भेलऽ मतबलबा
बैठि गेलऽ अढ़ुलबा फुल के गाछ ।।

## महिषासुरक गीत

कहमा बिसरलह हो महिषासुर भैंसिया के नथबा
कहमा बिसरलह सयलिआव।
बथने बिसरलहुँ सेवक भैंसिया के नथबा
गहबर बिसरलहुँ सयलिआव।।
माय के आँचर धेने महिषासुर अरज करय
हमर गौना दिअउ ने कराय।
गौना के धोतो महिषासुर मलिनो ने भेलह
अपने भेलह अलोपित।।

## गरीब भुइञाक गीत

किए भगता काशी जाइयै किए परयगबा हो
किए सुतलै तिरिया संग साथ हो।
नहि भगता काशी जाइयै नहि परयगबा हो
नहि सुतलैं तिरिया संग साथ हो।।
अबितहि छलियै बौआ धरम केर बटिया हो
कोढ़िया बटिया घेरने ठाढ़ हो।
अबितहि छलियै गरीबन धरम केर बटिया हो
अन्हरा बटिया घेरने ठाढ़ हो।।
अबितहि छलियै बाबू धरम केर बटिया हो
बाँझिन तिरिया बटिया घेरने ठाढ़ हो।



कोढ़िया के काया देलियै अन्हरा के नयनमा हो
बाँझिन तिरिया बालक देलियै दान हो।।
ताही मे लगलै बाबू हमरा के देरिया हो
नाही सुतली तिरिया संग साथ हो।
नाही गेली काशी परयाग हो'।

•

तुलसी के पतबा तोड़ि बान्हलऽ चदरिया हो
बान्हि छान्हि कैलऽ समतूल हो।
काँख तर लेलऽ गरीब हो लाले लाल धोतिया हो
चलि भेल गंगा असलान हो ।।
एक कोस गेलऽ गरीब हो दोसर कोस गेलऽ हो
तेसर कोस गंगा असलान हो।
धड़ि एक चलल गरीब हो पहर पएरा बिजलै हो
जूमि गेलऽ गंगा असलान हो ।।
कुसुम रंग धोतिया गरीब हो उपरे नेरौलऽ हो
चलि देलऽ गंगा असलान हो।
एक डुम्मी मारलऽ गरीब हो दोसर डुम्मी मारलऽ हो
तेसर डुम्मी कएलऽ असलान हो ।।
एक ताल मारलऽ गरीब हो दोसर ताल मारलऽ हो
डोलि गेल इन्दर कविलास हो ।।
एक बेर बोलू हो पञ्चन श्री भगवान हो
दोसर बेर बाबा बैजनाथ हो।
तेसर बेर बोलू हो पञ्चन इन्दर कविलास हो
चारिम बेर श्रीसीताराम हो ।।

## धर्मराजक गीत

चारू दिस देखै छी दीनानाथ जलम जलामय
कोने विधि उतरब गंगा पार।

नहि हम देखी हो दीनानाथ नैया–नवेरिया
नहि देखी झिलमिल मलाह।
आठहि काठ केर नैया निरमाओल
चनने रचल करुआरि।
ताहि पर बैसल केवट मलहवा
करू केवट लगले गंगा पार।
अगिले जे माङी बैसल अलख निरंजन
पछिले माङी दसो रे देवान।
तर छोड़य धरती नैया उपर असमनमा
बीचे नैया पवन–बसात।
धर्मक नैया हेतै हो दीनानाथ पार उतारतै
पापक नैया बूड़त मझधार।

## पीर बाबाक गीत

आहो साहेब औलिया पीर, आहो साहेब औलिया पीर।
बाप तोहर पढ़ौ रे औलिया उर्दू रे फारसी
तोहूँ पढ़ले सात खण्ड कुरान।
हाथ तोहर शोभौ रे औलिया सोना षट्कोणमा
पैर शोभौ झुनकी खराम।
मुँह तोहर शोभौ रे औलिया पाकल बीड़ा पनमा
गला मे शोभौ गिरमलहार।
एक कोस गेल औलिया पहर पयरा बितलै
तेसर कोस जूमल मक्का देस।
तेसर कोस जूमल मदीना देस।

## कारिखक गीत

सितले अमुनिञा बाबू सितले जमुनिञा हो
सितले कदम जुड़ि छाँह हो।
ताही तर अपुरा मैया पलङा ओछाओल
सूतल बाबू कारिख नन्दलाल हो।।



कथिएक अउआ रे पउआ कथिएक पसिआ हो
कथिए घोरल हुनकर खाट हो।
सोने केर अउआ रे पउआ रूपे केर पसिआ हो
रेशमे घोरल हुनकर खाट हो।।
ताही खाट सूतै दुलरा कारिख नन्दलाल हो
सूतल बाबू कारिख नन्दलाल हो।।
उठू उठू कारिख दुलरा लाली सेज पलङ्गिया हो
लिऔ बाबू सेवक के उदेस हो।
हम नहि उठबै अम्मा लाली सेज पलङ्गिया हे
नाहि लेबै सेवक के उदेस हो।।
अच्छत के धान गे अम्मा सेवक कूटि खेलकै गे
पीबि गेल अरकबा के दूध गे।
धूर बान्हल खस्सी गे अम्मा सेहो बेचि खेलकै गे
कइसे लेबै सेवक के उदेस गे।।
भुखले मे खेलकौ बाबू अच्छत के धनमा हो
पिलकौ अरकबा के दूध हो।
दुखले मे बेचलक बाबू धूर बान्हल खस्सी हो
लिऔ बाबू सेवक के उदेस हो।।
एक बेर बोलू हो पञ्चन श्रीमहादेव हो
दोसर बेर कृष्ण भगवान हो।
तेसर बेर बोलू हो पञ्चन भुइञा हमर देवता हो
चारिम बेर श्रीहलुमान हो।।

•

कारिख जनम भेल दुनिञा आनन्द भेल
डोलि गेल इन्दर कविलास हो ।
सुरपुर डोलैए कारिख नरपुर डोलैए हो
डोलि गेल इन्दर कविलास हो ।।
उतरहि राज से अयलै एक बटोहिया हो
बैठि गेल चनन बिरिछ हो ।
जल्दी से लबियौ मैया मधुरीके फुलबा हो
पूजियौ हमर छठिहार हे ।।
उजरी चदरिया तानि कारिख तोहूँ सुतलऽ हो
सुति रहलऽ निशि अब भाग हो ।

निशि निशि रतिया कारिख उठलऽ चेहाय हो
लागि गेल मधुरी पियास हो ।।
किए तोरा घटलऽ कारिख अनधन सोनमा हो
किए घटलऽ पाकल बीड़ा पान हो ।
कओने उदेस कारिख रन वन फिरलऽ हो
किए लागल मधुरी पियास हो ।।
नहि मोरा घटलै अम्मा अनधन सोनमा हे
नहि घटलै पाकल बीड़ा पान हे ।।
सेवक उदेस हे अम्मा रन वन फिरलहुँ हे
लागि गेल मधुरी पियास हे ।।

●

कओने निरमोहिआ राम बँसबा कटेलखिन, राम केदलिया वनमे ना।
कओने निरमोहिआ बिनेलखिन खाट, राम केदलिया वनमे ना ।।
जोतिक निरमोहिआ राम बँसवा कटेलखिन, राम केदलिया वनमे ना ।
कारिख दुलरा बिनेलखिन चारु खाट, राम केदलिया वनमे ना ।।
किनकर बेटिया राम भोजनऽ बनेलखिन, राम केदलिया वनमे ना ।
कओने निरमोहिआ जेमैए छप्पन भोग, राम केदलिया वनमे ना।।
राजा उदयचन्द्रके बेटी राम भोजन बनेलखिन, राम केदलिया वनमे ना ।
कारिख दुलरा जेमैए छप्पन भोग, राम केदलिया वनमे ना ।।

●

नदिया के तीरे तीरे खेललऽ शिकार, हो कारीख दुलरुआ ।
बिछि बिछि मारलऽ हो मजूर, हो कारीख दुलरुआ ।।
हरिणो ने मारलऽ कारिख तितिरो ने मारलऽ, हो कारीख दुलरुआ ।
बिछि बिछि मारलऽ हो मजूर, हो कारीख दुलरुआ ।।
कानि कानि कहै छाथन वन के मजूरनी, हो कारीख दुलरुआ ।।
जब तोहर आहे मजूरनी सेनुरा बकसबऽ, हो कारीख दुलरुआ ।
हमरा के किए देबऽ दान, हो कारीख दुलरुआ ।।
भरि राति आहो कारिख नचबा देखैबऽ हो कारीख दुलरुआ ।
भोर उठि शबद सुनायब, हो कारीख दुलरुआ ।।

